आमेर | जयपुर का कछवाह राजवंश

दुल्हेराय → 1137 | तेजकरण

कोकिल देव → 1207

पृथ्वीराज कछवाह → 1527

भ- भारमल → 1547-1573

भ- भगवन्त दास → 1573-1589

म मिर्जा राजा मानसिंह I → 1589-1614

म " " जय सिंह I → 1621-67

य सवाई जय सिंह → 1700-1743

1707 1699

ईश्वरी सिंह → 1743-1750

माधो सिंह I 1750-1768

प्रताप सिंह → 1778-1803

ज → जगतसिंह II 1807-1835

रा - राम सिंह II 1835-1880

मा - माधोसिंह II → 1880-1922

मा - मानसिंह II → 1922-1956

ज रा मा मा

दुल्हेराय / तेजकरण :- 1137

↳ दुल्हेराय ने मीणा / बड़गुर्जरों को हराकर
ढूंढाड़ प्रदेश की नींव रखी

दुल्हेराय ने अपनी राजधानी → दौसा (पहली राजधानी)

→ आमेर के कछवाह राजवंश। कुलदेवी → जमुवाय माता
अन्नपूर्णा
बड़वाय माता।

दुल्हे राय मांची / जमुवारामगढ़ में मन्दिर बनवाया।

→ यहाँ ढुन्ढ नदी बहने के कारण ढुंढाड़ कहलाया

→ आमेर के कछवाह राजवंश का आदिपुरुष, मूलपुरुष, संस्थापक - दुल्हेराय / तेजकरण को माना जाता है।

→ कोकिल देव → 1207 → इन्होंने आमेर को राजधानी बनाया।

→ राजदेव / रामदेव : इन्होंने कदमी महल का निर्माण करवाया → 1237

→ इस महल में कछवाह राजवंश का राजतिलक मीणा जनजाति का सरदार किया करता था

→ प्रथ्वीराज कछवाह → 1527

↳ खानवा युद्ध में (1527) राणा सांगा की सहायता करने प्रथ्वीराज कछवाह गया था ✓

→ राणा सांगा से प्रेरित होकर अपने पुत्र का नाम सांगा रखा तथा सांगानेर कस्बा बसाया

→ प्रथ्वीराज कछवाह ने अपने 12 पुत्रों को अलग-अलग भाग दे दिया जिसे - बारहकोटड़ी के नाम से जाना जाता है।

पृथ्वीराज कछवाह के समय कापालिक सम्प्रदाय के गुरु चतुरनाथ और रामानन्दी सम्प्रदाय संत कृष्णदास पयोहारी के बीच शास्त्रों पर बहस हुयी (जीत → पयोहारी)

→ इनके समय रामानन्दी सम्प्रदाय की प्रमुख पीठ बनी

भारमल :- आमेर-उर्फ-उमरा

↳ मुगलो की अधिनता स्वीकार करने वाला राजस्थान का पहला राजा

→ वैवाहिक संबंध स्थापित करने वाला पहला शासक

→ मजनु खाँ के सहयोग से पहली बार अकबर से मिला भारमल

→ 1562 → चगताई खां के सहयोग से सांभर में भारमल ने अपनी पुत्री हरमखा बाई | शाही बाई | रम्खी बाई का विवाह अकबर के साथ किया।

→ इनसे उत्पन्न सन्तान → जहांगीर

→ अकबर ने हरखा बाई को मरियम की उपाधि दी

→ शेख सलीम चिश्ती ने हरखा बाई - उज्जमानी | उज्जमानी की उपाधि दी

→ जहांगीर ने अपनी माता हरखा बाई को मरियम उज्जमानी कहा।

→ अकबर ने भारमल को 5000 का मनसबदार बनाया था।

अमीर-उल-उमरा की उपाधि दी।

भारमल :

↳ नागौर दरबार → 1570 → भारमल के सहयोग (most)

अकबर की अधीनता स्वीकार :

मारवाड़ → मोटा राजा उदयसिंह

आमेर → भारमल

बुन्दी | रणथम्भौर → सुर्जन हाड़ा

जैसलमेर → हरराय भाटी

BKNR → कल्याण मल → पृथ्वीराज राठौड़, रायसिंह

भारमल → हरखा बाई | शाही | रुक्मी बाई

↓

अकबर

पुत्र

जहांगीर

जोधा / अकबर

"मारवाड"

भगवन्त दास :

मनभावती बाई

↳ भगवन्त दास ने अपनी पुत्री मान बाई | मानी बाई का विवाह अकबर के पुत्र जहांगीर से किया

→ मान बाई + जहांगीर से उत्पन्न सन्तान → खुसरो

→ मनभावती बाई की शाहबेगम की उपाधि जहांगीर ने दी

→

→ खुसरो के गुरु → सिक्खों के पांचवे गुरु अर्जुन देव

→ जहांगीर ने अर्जुन देव की आगरा मे हत्या करवा दी

→ जहांगीर ने खुसरो को अंधा करवा दिया

→ मनभावनी ने दुखी होकर अफीम का अत्याधिक सेवन कर मृत्यु को प्राप्त किया

→ भगवन्तदास महाराणा प्रताप के पास 1573 मे तीसरे नम्बर पर सन्धि प्रस्ताव लेकर गये

→ चितौड़ के तीसरे साके मे अकबर का साथ दिया भगवन्तदास ने

→ दादू दयाल जी भगवन्तदास के सहयोग से अकबर से मिले

most

मिर्जा राजा मानसिंह → 1589-1614

① → अकबर का विश्वासपात्र बनाना ✓
② → संधि और युद्ध के लिए भेजना ✓
③ → मनसबदारी छोड़कर सुबेदारी देना ✓
④ → चार चीजें लेकर आना ✓

मिर्जा / नकली राजा — कार्य थे

- बछुपोटरी
- जगतशिरोमणि
- शीला माता
- मीनाजाति (लोगों)

मिर्जा राजा मान सिंह :

जन्म → मौजमाबाद (जयपुर

→ सर्वप्रथम अभियान : 1569 → रणथंभौर के सुर्जन हाड़ा को मुगलों की अधीनता स्वीकार करवायी

→ मान सिंह ने अपने जीवन में 77 युद्ध लड़े.

अकबर का विश्वास पात्र बनाना

- अकबर ने मान सिंह को मिर्जा और राजा की उपाधि दी
- अकबर ने फर्जन्द की उपाधि दी
- अकबर के नवरत्नों में शामिल था
- सर्वाधिक मनसब 7000 का मनसब दिया
  - पहले 5000 का मनसब दिया था

→ अकबर का पहला विश्वासपात्र राजपूत राजा

→ संधि और युद्ध के लिए भेजा

महाराणा प्रताप के पास चार संधि प्रस्ताव भेजे

- ज → जलाल खाँ कोरची – 1572
- मा → मान सिंह
- भा → भगवन्तदास
- टो → टोडरमल

(मान सिंह, भगवन्तदास, टोडरमल → 1573)

असफल

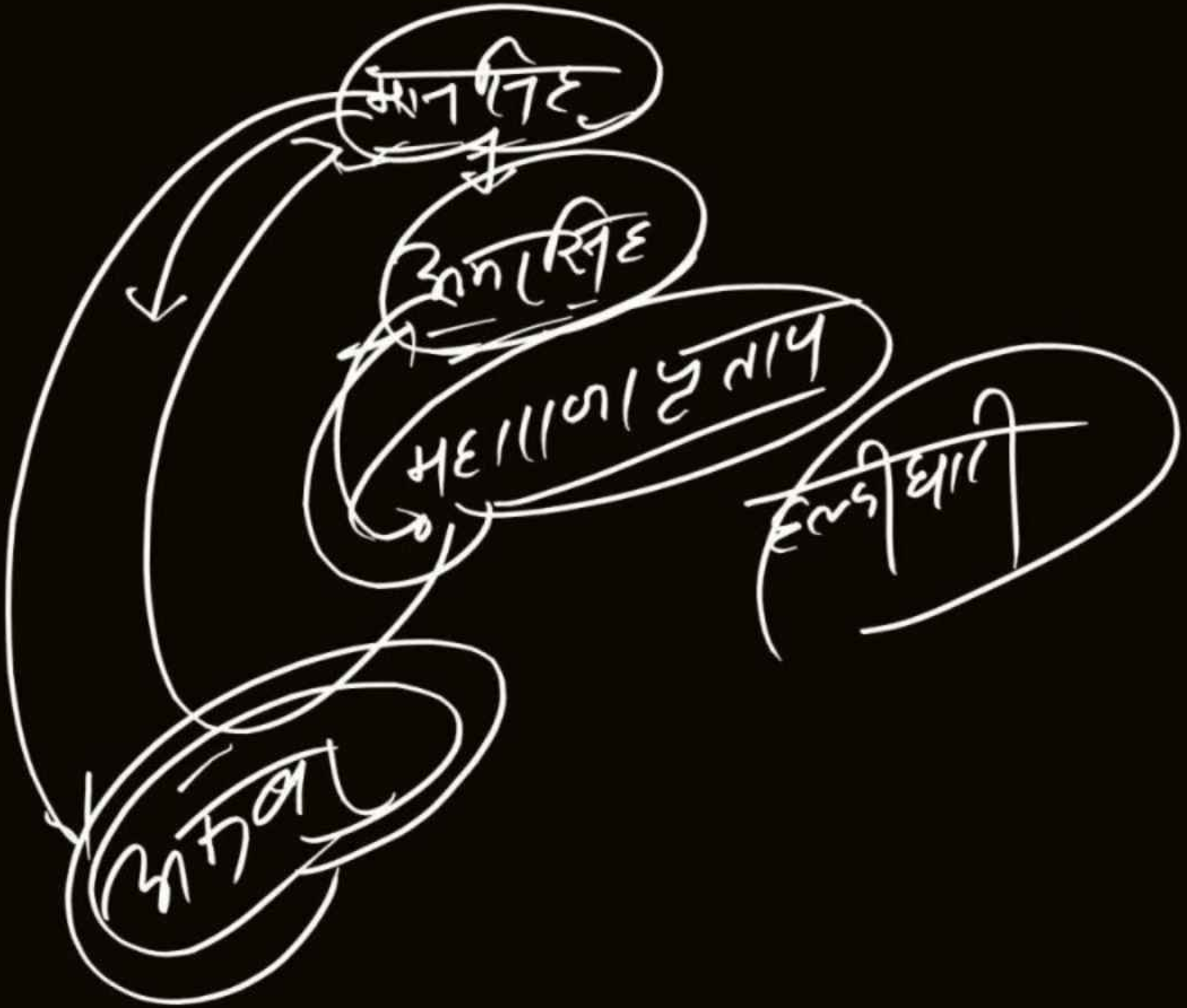
मानसिंह
अमरसिंह
महाराणा प्रताप
हल्दीघाटी
अकबर

→ हल्दीघाटी का युद्ध → 18 जून 1576

↳ मुगल सेना का नेतृत्व मिर्जाराजा मान सिंह

→ इस युद्ध मे मेवाड़ केसरी महाराणा प्रताप की जीत हुयी

→ अकबर ने नाराज होकर मानसिंह की ड्योढ़ी बन्द करदी मनसबदारी छीनकर, बंगाल, बिहार, काबुल, लाहौर की सुबेदारी दे दी

मिर्जा राजा मान सिंह

→ मान सिंह ने काबुल के 5 कबिलो पर अधिकार किया।

→ काबुल में मिर्जा हाकिम के विद्रोह को दबाया।

→ काबुल विजय के बाद आमेर का झण्डा पचरंगी किया

→ पहले आमेर का झण्डा झाड़शाही था

→ मिर्जा राजा मानसिंह के समय ब्लू पॉटरी और मीनाकारी कला आमेर आयी

→ मान सिंह के समय मीनाकारी कला के कलाकार, श्याम सिंह हरि सिंह, किशन सिंह आये।

→ बंगाल में लक्ष्मीनारायण और केदार को हराकर शीला देवी की मूर्ति आमेर दुर्ग में जलेब चौक के पास स्थापित करवायी

राधागोविन्द मन्दिर → मथुरा में बनवाया।

महादेव मन्दिर गया बिहार में बनाया।

→ मान सिंह की पत्नी कनकावती ने अपने पुत्र जगत सिंह की याद मे जगत शिरोमणी मंदिर बनवाया
इसमे वही प्रतिमा रखी है जिसकी पूजा मीरा बाई बचपन मे किया करती थी

→ दरबारी विद्वान → सुन्दरदास, हरिनाथ
जगन्नाथ ने मान सिंह मुक्तावली ग्रंथ लिखा
मुरारीदान → मान प्रकाश ग्रंथ लिखा
पुण्डरिक ने राग चन्द्रोदय, राग नतकी ग्रंथ लिखा
दलपत सिंह → पवन पश्चिम प्रशस्ति लिखी

Imp

मानसिंह अकबर और जहांगीर को सेवा में

अकबर → 1589-1605

जहांगीर → 1605-1614

मिर्जा राजा जयसिंह → 1621-67

→ सर्वाधिक → 46 वर्ष

→ सात सौ दोहे

→ पुरन्दर की संधि

→ जयगढ़

मिर्जा राजा जय सिंह

→ सर्वाधिक शासन काल → ५६ वर्षों तक शासन किया।

→ तीन मुगल बादशाहों की सेवा की

जहांगीर → शाहजहां → औरंगजेब

- जहांगीर ↓ अहमदनगर अभियान पर भेजा
- शाहजहां ↓ कंधार अभियान ↓ मिर्जा राजा की उपाधि दी
- औरंगजेब → शिवाजी से पुरन्दर की सन्धि करने के लिये भेजा

→ बहादुरगढ का युद्ध → 1658

↳ मिर्जाराजा जयसिंह ने शुजा के खिलाफ दारा शिकोह का साथ दिया

→ सामुगढ का युद्ध → 1658 → इस युद्ध मे मिर्जाराजा जयसिंह ने औरंगजेब का साथ दिया दाराशिकोह के खिलाफ

पुरन्दर की संधि → 11 June 1665 ✓

मिर्जा राजा जयसिंह का कथन → मैं शिवाजी को वृत्त के केन्द्र बिन्दु तक घेर लूंगा

→ यह संधि → मिर्जा राजा जयसिंह और शिवाजी के मध्य हुयी

संधि के तहत शिवाजी ने 35 में से 23 दुर्ग मुगलों को सौंप दिये

→ मिर्जा राजा जयसिंह के कहने पर शिवाजी आगरा दरबार गये।

→ मिर्जा राजा जय सिंह के दरबार मे बिहारी कवि था
इन्होंने बिहारी सतसई की रचना की इसमें 713 दोहे है।

→ पहला दोहा → राधा को समर्पित है।
दूसरे दोहे मे → गणेश जी का नाम

बिहारी को जय सिंह ने
काली पहाड़ी जागीर मे दी

→ बिहारी का भांजा कुलपति मिश्र → रस रहस्य ग्रंथ लिखा

राम सिंह के दरबार मे था

↳ 52 ग्रन्थ लिखे

मिर्जा राजा जयसिंह चिल्हे की पहाडी पर
जयगढ दुर्ग का निर्माण करवाया

सवाई जयसिंह [] 1700-1743

(7)

1. दुबारी समझौता
2. पाच वेधशालाओं का निर्माण
3. हुरडा सम्मेलन
4. जयपुर नगर की स्थापना
5. अश्वमेध यज्ञ

M → पहले → मिर्जाराजा जयसिंह

S → बाद → सवाई जयसिंह

→ जयपुर के जल महल

→ सवाई जय सिंह ने जयपुर निर्माण के समय → शाखाओं को रोकने के लिए ये महल बनवाये

→ चन्द्रमहल / सिटीपैलेस
का निर्माण सवाई जयसिंह
ने करवाया

→ सवाई जय सिंह ने अपनी पत्नी चन्द्रकंवर के लिए सिसोदियारानी का महल बनवाया

सवाई जयसिंह → मुगल बादशाहों की सेवा की

1. औरंगजेब
2. बहादुरशाह
3. जहांदरशाह
4. फर्रुखशियर
5. रफीउद्दरजात
6. रफीउद्दौला
7. रोशन अख्तर

मो. रंगीला

सवाई की उपाधि → औरंगजेब ने दी

मिर्जा की उपाधि → फर्रुखशीयर ने दी

राजराजेश्वर महाराजाधिराज की उपाधि मोहम्मदशाह रंगीला | रोशन अख्तर ने दी

→ जाजऊ का युद्ध → 1707 → इस युद्ध में मुअज्जम का साथ विजयसिंह ने तथा आजम का साथ सवाई जयसिंह ने दिया

→ जीत → मुअज्जम | बहादुर शाह की उपाधि
जयपुर का राजा विजय सिंह को बनाया

आमेर | जयपुर का नाम बहादुर शाह ने मोमीनाबाद | इस्लामाबाद नाम रखा

देबारी समझौता के तहत मेवाड़ शासक अमरसिंह II ने अपनी बेटी का विवाह सवाई जय सिंह से किया।

→ सवाई जय सिंह ने पांच वेधशालाओं का निर्माण करवाया।

1. दिल्ली → सबसे प्राचीनतम
2. जयपुर → नवीनतम → रामयंत्रायण, जयप्रकाश, लघुयंत्र, जन्तर मन्तर
   → युनेस्को ने अगस्त 2010 में विश्व धरोहर की सूची में शामिल किया।
3. उज्जैन
4. मथुरा
5. वाराणसी | बनारस

हुरड़ा सम्मेलन → 17-7-1734

↳ किसने बुलवाया → सवाई जयसिंह मराठे के प्रवेश को रोकने के लिए

↳ अध्यक्ष → मेवाड़ शासक जगतसिंह II

↳ यह सम्मेलन असफल हुआ

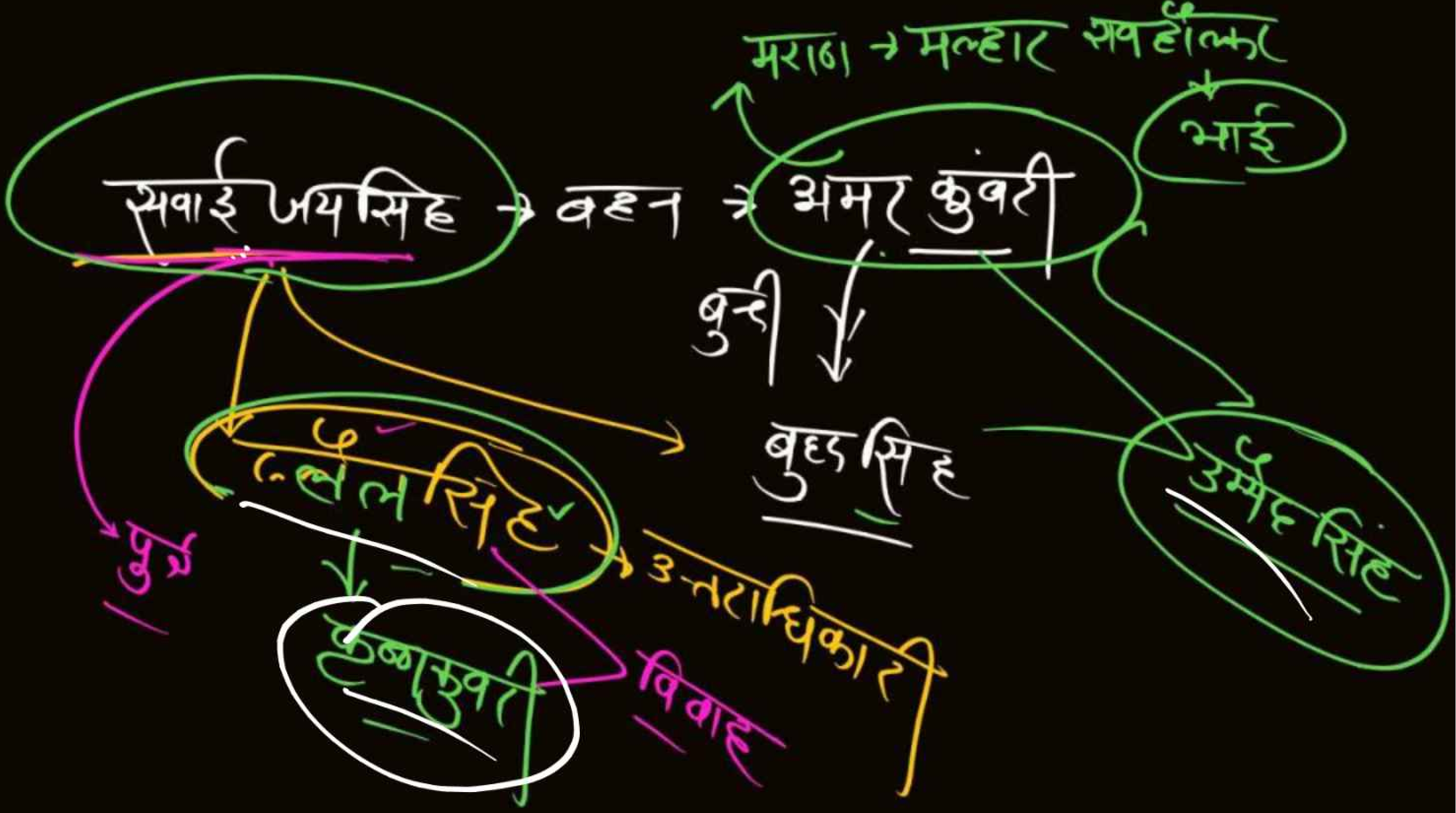
मराठा → मल्हार राव होल्कर
भाई
सवाई जयसिंह → बहन → अमर कुंवरी
बुंदी
बुद्ध सिंह
उम्मेद सिंह
ईश्वरी सिंह → उत्तराधिकारी
पुत्री
कृष्णाकुंवरी
विवाह

भरतपुर विवाद — मोहकम सिह / बदन सिह — के मध्य

→ सवाई जय सिह ने बदन सिह को भरतपुर का राजा बनवाया।

→ बदन सिह को डीग की जागीर दी

→ बदन सिह सवाई जय सिह ने ब्रजराज की उपाधि दी

→ सवाई जय सिंह 3 बार मालवा का सुबेदार रहा।

→ धौलपुर समझौता → 1741 → पेशवा बालाजी बाजीराव के साथ जयसिंह II का समझौता।

→ गंगवाना का युद्ध → 1741 → मारवाड़ के राजा अभयसिंह और BKNR के शासक जोरावर सिंह के मध्य हुआ।
BKNR का साथ सवाई जय सिंह ने दिया।

1740 में अश्वमेध यज्ञ :

↳ अन्तिम हिन्दु राजपूत राजा सवाई जय सिंह था जिसने सिटी पैलेस | चन्द्रमहल मे अश्वमेध यज्ञ का आयोजन किया

→ पुरोहित → पुण्डरिक रत्नाकार

→ दीप सिह कुम्भाणी ने यह घोड़ा पकड़ा था

आमेर → भारमल
↓
पुत्री ↳ हरखा बाई | शाही बाई | रुक्मी बाई
↓
विवाह
अकबर
पुत्र
जहांगीर ✓
सलीम

भगवन्तदास ✓
↓
भावती बाई
मानबाई
→ विवाह
↓
जहांगीर
पुत्र
खुसरो ✓

मारवाड़ ✓
मोटाराजा उदयसिंह
↓
पुत्री मानमती | मानी बाई
जगत गोसाई | जोधा बाई
विवाह
जहांगीर
पुत्र → खुर्रम | शाहजहां ✓

सवाई प्रताप सिंह

1. → प्रताप बन जाना | हवामहल
2. → विद्वान बन जाना
3. साहीब बन जाना
4. कद को बढ़ाना
5. तंग होकर तमाशा समाप्त होना

याद रखने योग्य

→ हवामहल

→ निर्माण → सवाई प्रतापसिंह ने

→ कब → 1799

→ 5. मंजिला इमारत

→ 953 खिडकिया | 365 जाली झरोखे

→ 88 फीट

↳ शिल्पी → लाल चन्द

→ कृष्ण का मुकुट (कर्नल टॉड)

→ समतल भूमि पर बना ऊँचा दुर्ग माना जाता है।

→ हवामहल में पांच मंजिल

→ शरद (हवा) विचित्र रत्न प्रकाश

(1) प्रताप मंदिर (5) (3) (2) (4)

(1) श → शरद मंदिर | प्रताप

(2) र → रत्न मंदिर

(3) वी → विचित्र मंदिर

पी → प्रकाश मंदिर

हवा में रहता है → हवा मंदिर

→ सवाई प्रताप सिंह के दरबार में गुणीजन खाना था। (imp Important)

→ 22-22 विद्वानों की मण्डली थी

→ इनके दरबार की गन्धर्व बाइसी प्रसिद्ध है।

→ राधा गोविन्द संगीत सार सम्मेलन का आयोजन करवाया। → प्रतापसिंह ने

↳ अध्यक्ष → देवर्षि ब्रजपाल भट्ट

→ प्रताप सिंह के संगीत गुरु → चाँद खाँ ✓

↓

बुद्धप्रकाश की उपाधि दी प्रताप सिंह ने

→ सवाई प्रताप सिंह स्वयं "ब्रजनिधी" नाम से कविताएं लिखा करते थे

काव्य गुरु → गणपति भारती ✓

→ जयपुर चित्रकला शैली का स्वर्ण काल

→ साहिबराम नामक चित्रकार ने ईश्वरी सिंह का आदमकद चित्र प्रताप सिंह के दरबार में बनाया

→ सर्वाधिक चित्र → हवामहल पर बने

तुंगा का युद्ध → 1787

↳ सवाई प्रतापसिंह तथा मारवाड़ के राजा विजयसिंह की संयुक्त सेना मराठा शासक महादजी सिंधिया को पराजित किया

महादजी का कथन "अगर मैं जिन्दा रहा तो जयपुर को धूल में मिला दूंगा

पाटन का युद्ध → 1790 — विजयसिंह, प्रतापसिंह → डी. बोईन ने हराया।

↓

कुचामन

↓

मेड़ता नागौर

तमाशा लोकनाट्य शैली → महाराष्ट्र की मानी जाती है।

महाराष्ट्र के नृत्य → ललिता तमा लव कौनी

ललिता तमाशा लावणी कौनी

सर्वाधिक मराठे सवाई प्रताप सिंह के समय राजस्थान आये

तमाशा लोकनाट्य शैली का बंशीधर भट्ट

↳ स्त्री की भूमिका स्त्री निभाती है

जगत सिंह II

↳ गिंगोली | गिंगोली का युद्ध | कृष्णा कुमारी विवाद → 1807

↳ जगत सिंह ने मारवाड़ राजा मान सिंह को पराजित किया

→ इसे जयपुर का बदनाम बादशाह कहा जाता है।

→ अप्रैल 1818 में अंग्रेजों के साथ संधि

→ जगत सिंह पासवान रसिकप्रिया

→ इसे नाहरगढ़ में नजर बंद किया।

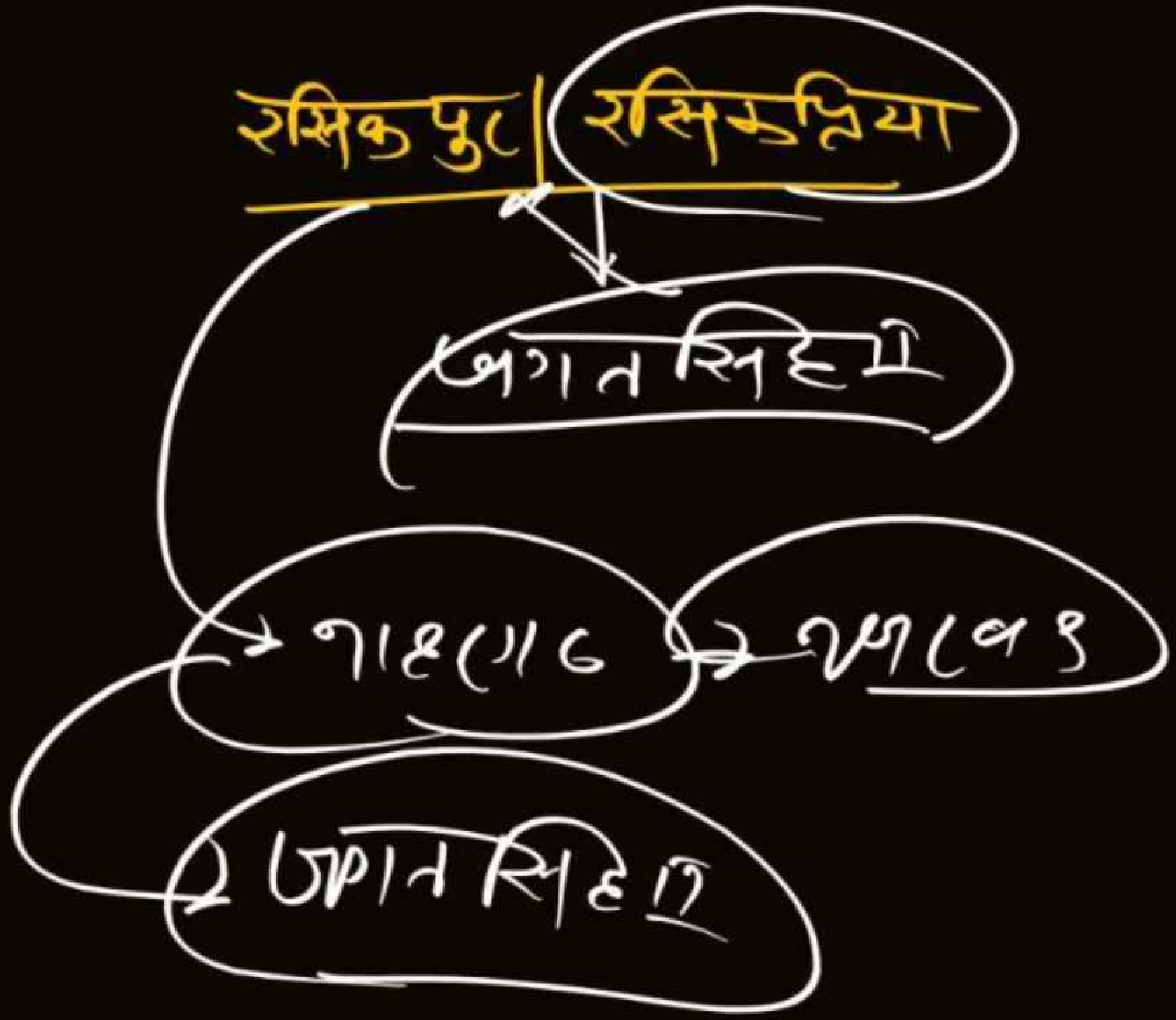

रसिक पुर
रसिकप्रिया
जगत सिंह
जगत सिंह

राम सिंह II :- 1835-1880

16 माह की उम्र मे राजा बनने वाला शासक

→ सर्वाधिक अंग्रेज प्रेमी

→ लार्ड लुडलो को राम सिंह II का संरक्षक बनाया

Trick → दास पर शक

दास प्रथा

दहेज

सती प्रथा

कन्या वध

→ रोकने का कार्य

लुडलो ने किया

राम निवास बाग

राम सिंह II के समय

↓

अंग्रेज आये

- लार्ड मैयो
- लार्ड नार्थ ब्रुक
- प्रिंस ऑफ वेल्स अल्बर्ट
- " " " एडवर्ड पंचम
- " " " " सप्तम

→ 1857 की क्रान्ति मे अंग्रेजों का साथ देने वाला राम सिंह II था।

→ अंग्रेजो ने राम सिंह II को सीतार-ए-हिन्द की उपाधि और कोटपुतली जागीर दी

→ 1868 में लॉर्ड एडवर्ड के आगमन पर जयपुर शहर को गुलाबी रंग | गेरुआ रंग में रंगवाया।

→ The Royal Town of India पुस्तक | पत्रिका में स्टीवन रीड्स नामक व्यक्ति ने जयपुर को पिंक सिटी नाम दिया

→ 1876 में प्रिंस ऑफ वेल्स अल्बर्ट के हाथों जयपुर के हृदय रामनिवास बाग अल्बर्ट हॉल की नींव रखवायी

→ वास्तुकार → स्टीफन जैकब

रामसिंह के समय → निर्माण

- मदरसा-ए-हुनरी (राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट)
- प्रमुख रामगढ़ अभ्यारण्य बनवाया।
- रामनिवास बाग बनवाया
- राम प्रकाश थियेटर बनवाया
- महाराजा कॉलेज बनवाया
- कन्या महाविद्यालय की स्थापना
- ब्ल्यू पॉटरी कला < चूड़ामणि, कालूराम } कलाकार

ब्ल्यू पॉटरी कला
का स्वर्ण काल
↓
राम सिंह II का
काल

माधो सिंह II → 1880-1922

↳ (पैसों वाला राजा)

→ इन्होंने नाहरगढ दुर्ग में अपनी 9 प्रेमिकाओं के लिए एक जैसे ही महलो का निर्माण करवाया

→ 1902 में एडवर्ड सप्तम के राज्याभिषेक में भाग लेने इंग्लैण्ड गये

→ सिटीपैलेस में मुबारक महल का निर्माण करवाया

गंगा जल

गाय

गोविंद

→ माधोसिंह I

→ डाक व्यवस्था की शुरुआत माधोसिंह II के समय 1904

→ बनारस हिन्दु विश्वविद्यालय के लिए 5 लाख रुपये चन्दा मदन मोहन मालवीय को दिया

नोट → महामना की उपाधि → गांधीजी ने मालवीय को दी

→ माधोसिंह II चान्दी के बड़े बर्तन मे पानी अपने साथ लेकर इंग्लैण्ड गये

मान सिंह II → 1922-1956

- ↳ बचपन का नाम → मोर मुकुट सिंह
- → पोलो के खिलाडी

↳ मान सिंह और गायत्री देवी ने कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में एक साथ पढ़ाई की

→ 30 मार्च 1949 को एकीकरण के चौथे चरण में जयपुर का विलय हुआ और मान सिंह को राजप्रमुख बनाया गया

→ 1919 में गायत्री देवी का जन्म (मान सिंह की पत्नी)

नोट :- लोकसभा में जाने वाली पहली महिला सांसद

✓ 1919 → प्रथम पशु गणना

✓ 1919 → वर्साय की संधि

✓ 1919 → विद्युलाल भट्टाचार्य आयोग

✓ 1919 → रौलेट एक्ट बना

✓ 1919 → जलीयावाला बाग हत्याकाण्ड

✓ 1919 → खिलाफत आन्दोलन

→ 1 नव 1956 राजप्रमुख का पद समाप्त (राज्यप···का पद स्थापित)

→ 1956 → भाषा के आधार पर राज्यों का पुनर्गठन

→ 1956 → सूरतगढ़ कृषि फार्म स्थापित

→ 1956 → में कर्नल सैन को पद्म भूषण से सम्मानित

→ 1956 → एकीकरण पूर्ण हुआ